संपादक की कलम से.....

नव वर्ष 2017 की शुभकामनाएं.....

सच्ची कला आत्मा की अभिव्यंजना है। कला में आत्म चेतना के संस्पर्श से सौन्दर्य का उद्‌भव होता है और सौन्दर्य के कारण आनन्द का उद्रेक होता है। कलाएं संवेदनशील चित्त की रसभरी अभिव्यक्ति है। कलाकार द्वारा रची गई हर एक सच्ची कलाकृति न केवल सुन्दर होती है, बल्कि मूल्यों, मान्यताओं, आदर्शों एवं सांस्कृतिक प्रत्ययों की प्रतीक भी होती है। सच्ची कला कृतियों का सौन्दर्य शाश्वत होता है। कलाएं नियम और शास्त्रों में उतना नही जीती, जितना परम्पराओं में।

कला, कलाकार और कलात्मकता –तीनों शब्द एक ही डोर से बंधे है। सौन्दर्य कला का प्राण है। कलात्मक सृजनशीलता में कलाकार का सौन्दर्यात्मक दृष्टिकोण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इस मूल विचार को नही भूलना चाहिये, कि कलायें सौन्दर्य की साधना करती हैं। कलाकार कलात्मक सृजनशीलता के माध्यम से सौन्दर्य की पराकाष्ठा तक, उसके पूर्ण सौन्दर्य तक पहुँचना चाहता है। स्वर तथा लय के माध्यम से जब कलाकार सृजन करता है, तो विस्तार व सृजन की प्रक्रिया के दौरान उसकी दृष्टि सौन्दर्य पर ही होती है, जिससे वह कोई समझौता नही करता है बल्कि सौन्दर्य के संरक्षण व उसके संवर्धन में कभी–कभी वह शास्त्रीय अनुशासन को भंग भी कर देता है। राग की शुद्धता से समझौता हो सकता है, लेकिन सौन्दर्य से समझौता नही होता, क्योंकि सौन्दर्य से उत्पन्न आनंद उसका मुख्य लक्ष्य होता है।

सृजनशीलता संगीत का स्वभाव है। संगीत प्रतिपल एक नये रूप में अभिव्यक्त होता है। संगीतकार की साधना जैसे–जैसे गहरी होती जाती है, कलाकार की सृजनशीलता भी विस्तृत होती जाती है। अनवरत् साधना संगीत के सौन्दर्य को बढ़ाती है, जिससे उसके आनंद के स्तर में क्रमशः वृद्धि होती जाती है।

हर घराने का अपना सौन्दर्य है, जो उसे दूसरे घराने से अलग करता है। श्रुति को स्वर, स्वर को राग और राग को रस में परिणित कर श्रोताओं को आनंदमग्न करने में संगीतकार की कलात्मक सृजनशीलता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संगीत में सृजन की प्रक्रिया, स्वर सौन्दर्य व लय सौन्दर्य को निरन्तर जन्म देती रहती है। किसी कलाकार की कलात्मक सृजनशीलता व उसके सौन्दर्य का आनंद लेने के लिये श्रोता का भी संस्कारित होना आवश्यक है, क्योंकि संस्कारवान चित्त में रस की निष्पत्ति होती है।

सौन्दर्य को लेकर अलग–अलग विद्वानों के अलग–अलग मत हैं। सौन्दर्य ऐन्द्रिय बोध का विज्ञान है। सौन्दर्य आत्मिक अनुभूति है तो मानसिक प्रतीति भी। सौन्दर्य वस्तु का गुण है तो सौन्दर्य उपयोगिता में भी निहित है। कांट ने कहा सौन्दर्य सामंजस्य में है। कलाकार के अन्तर्मन का बाह्य

सौन्दर्य के साथ सामन्जस्य रहता है, तभी कला जन्म लेती है। सामंजस्य बोध के सिद्धान्त में ही सौन्दर्य की व्याख्या निहित है। इस सिद्धान्त के अनुसार सौन्दर्य कलाकार के मन में है, कलाकृति में भी है और ग्राहक के मन में भी है। ये तीनों सौन्दर्य स्थल अलग–अलग नही है, इनमें पूर्ण सामन्जस्य है और इसी सामंजस्य में सौन्दर्य है। रस सिद्धान्त के अनुसार– सौन्दर्य स्थूल भी है, सूक्ष्म भी है, आन्तरिक भी है और बाह्य भी है। वर्षा को देखकर कलाकार का मन प्रसन्न हुआ अर्थात् बाह्य सौन्दर्य/प्रकृति सौन्दर्य के साथ कलाकार का अन्तर्मन प्रभावित हुआ। उसका मन आंगन बारिश से भीग गया। अनुभूति प्रगाढ़ हुयी, अभिव्यक्त होने को आतुर हुई। अभिव्यक्ति सुरों में हुई और मेघ मल्हार आदि रागों ने अस्तित्व पाया। इस सौन्दर्यपूर्ण अभिव्यक्ति को सुनकर श्रोता के मन में वर्षा की अनुभूति हुयी। कलाकार के मन में राग का सौन्दर्य रूप अमूर्त रूप में विद्यमान होता है, जिसकी अभिव्यक्ति राग प्रस्तुतिकरण में धीरे–धीरे क्रमिक रूप में विस्तार पाती है। राग प्रस्तुतिकरण में कलाकृति जो कि राग रूप में होती है, एक साथ पूरी अभिव्यक्त नही होती। राग के स्वरूप की अभिव्यक्ति और उसके सौन्दर्य बिन्दुओं का विस्तार धीरे–धीरे आगे बढ़ता जाता है, इस प्रक्रिया में कलाकार, प्रस्तुत राग और श्रोता एक साथ सामंजस्यपूर्ण स्थिति में रहते है। राग सौन्दर्य की सृजन प्रक्रिया विस्तार पाती जाती है और सभी आनंद की डोर से बंधे रहते है। यहीं कलात्मक सृजनशीलता है।

सृजनशीलता के इसी क्रम मे यह अंक आपके हाथों में सौंप रहा हूं।

धन्यवाद